प्राक्कथन

प्राक्कथन

आधुनिक हिन्दी साहित्य में नागार्जुन, फणीश्वरनाथ रेणु, उदयशंकर भट्ट, रांगेय राघव, देवेन्द्र सत्यार्थी, शैलेश मटियानी, राही मासूम रजा, श्रीलाल शुक्ल आदि लेखकों ने समकालीन आंचलिक उपन्यासों की स्वतन्त्र एवं दीर्घ परम्परा स्थापित की। इस परम्परा में रामदरश मिश्र का भी बड़ा योगदान रहा। इन लेखकों ने अपने-अपने उपन्यासों में किसी विशिष्ट जनपद, क्षेत्र या प्रदेश में बसे अंचलवासियों के आचार-विचार, रहन-सहन, परंपराएँ, अन्धविश्वास, लोक-गीत, धार्मिक, लोक सांस्कृतिक, आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक जीवन आदि तत्त्वों को अपनाकर हिन्दी उपन्यास क्षेत्र में एक नयी विधा का निर्माण किया। वैसे तो यह आंचलिकता प्रेमचन्द तथा प्रेमचन्द पूर्व के उपन्यासों में भी दिखाई देती है पर वह केवल पृष्ठभूमि के रूप में रही, रामदरश मिश्र जैसे उपन्यासकारों ने आंचलिकता को प्रधानता दी और 'आंचलिक उपन्यास' नामक एक नयी विधा का निर्माण किया।

मैं भी ग्राम में रहता हूँ। मेरा बचपन गांव के अंचल में ही बीता है, वही पर मैं नौकरी भी करता हूँ। पहले से ही देहातों से मेरे मन में लगाव रहा। उस पर मैंने भी कुछ कहानियाँ लिखी, जो सांगली आकाशवाणी व्दारा प्रसारित हुई हैं। संयोगवश रामदरश मिश्र जी का उपन्यास साहित्य पढ़ने का मौका मुझे मिला। उनके उपन्यासों में जो ग्रामांचल जीवन का यथार्थ चित्रण हुआ है, उसकी छाप मेरे मन पर अमिट रही। उनके उपन्यास मुझे आकर्षित करते रहे।

रामदरश मिश्र के उपन्यासों में उत्तर प्रदेश के 'कछार अंचल' में बसे गांवों की लोकसंस्कृति, विविध समस्याएँ और प्रेम के विविध रूपों ने मुझे आकर्षित किया तथा सोचने को बाध्य किया। इसलिए अपने लघु-शोध-प्रबन्ध के लिए उनके ही आंचलिक उपन्यासों को मैंने चुन लिया।

रामदरश मिश्र जी के प्रकाशित उपन्यासों की संख्या नौ है। उनमें से 'पानी के प्राचीर', 'जल टूटता हुआ' और 'सूखता हुआ तालाब', ये तीन उपन्यास उनके ही मतानुसार पूर्णांचलिक हैं। उनका दूसरा एक उपन्यास 'दूसरा घर' अर्धआंचलिक उपन्यास है। अन्य उपन्यासों में आंचलिकता पृष्ठभूमि के रूप में आयी दिखाई देती है।

इस लघु-शोध-प्रबन्ध में मैंने रामदरश मिश्र जी के 'पानी के प्राचीर', 'जल टूटता हुआ' और 'सूखता हुआ तालाब' इन तीन आंचलिक उपन्यासों का मूल्यांकन करने का प्रयत्न किया है। स्वयं मिश्र जी भी इन तीन उपन्यासों को पूर्णांचलिक उपन्यास मानते हैं।

मिश्र जी एक ऐसे उपन्यासकार हैं, जिन्हें गांव के प्रति लगाव रहा। गांव की नदियाँ, तालाब, खेती, त्यौहार और गांव के लोगों का जीवन आदि के प्रति गहरा आकर्षण रहा। उनके उपन्यासों में जन-जीवन और प्रकृति का गहरा सम्बन्ध दिखाई देता है।

प्रबन्ध में मैंने अंचल, आंचलिक, आंचलिक उपन्यासों का प्रारंभ, विकास आदि बातों पर भी विस्तार से चर्चा करने का प्रयत्न किया है।

प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबन्ध निम्नलिखित अध्यायों में विभाजित हैं -

प्रथम अध्याय- में 'आंचलिक उपन्यास का शिल्प विधान' शीर्षक के अन्तर्गत 'अंचल' शब्द, अर्थ और पर्याय, आंचलिक-आंचलिकता, आंचलिक उपन्यास की परिभाषा, परिभाषा सम्बन्धी निष्कर्ष तथा आंचलिक उपन्यासों की विशेषताओं के साथ-साथ आंचलिकता ग्रामीण या शहरी? और आंचलिक उपन्यास के तत्त्व आदि का संक्षेप में विविचन किया है।

द्वितीय अध्याय - में ' हिन्दी आंचलिक उपन्यास उद्‌भव और विकास' पर विस्तार से चर्चा की है। इसमें पृष्ठभूमि के रूप में आयी आंचलिकता, फिर आंचलिकता को प्राधान्य देकर लिखे गये उपन्यासों का चित्रण करने का प्रयत्न किया है।

तृतीय अध्याय - में मिश्र जी के प्रमुख तीन आंचलिक उपन्यासों का मूल्यांकन करने का प्रयत्न किया है- १) कथानक का आंचलिक आधार, २) अंचल में लोक संस्कृति का चित्रण, ३) अंधविश्वास एवं धार्मिक जीवन, ४) अंचल में चित्रित सामाजिक जीवन, ५) अंचल का राजनीतिक जीवन, ६) अंचल में चित्रित अर्थव्यवस्था। इन तत्त्वों पर मिश्र जी के प्रमुख तीन उपन्यासों में जो आंचलिक संदर्भ दिखाई देते हैं, उन पर प्रकाश डालने का मैंने प्रयत्न किया है।

चतुर्थ अध्याय- में स्वातंत्र्य, शिक्षा, वैज्ञानिकता औद्योगीकरण आदि कारणों से आंचलिक प्रदेश मे जो बदलाव आया, उसका चित्रण करने का प्रयत्न किया है।

पंचम अध्याय – उपसंहार के रूप में रहा। इसमें मैंनें पहले चार अध्यायों का निचोड़ सार रूप में दिया है तथा इस प्रबन्ध का जो कथ्य है, उसी पर प्रकाश डाला है।

उपसंहार के बाद **परिशिष्ट** है, जिसमें रामदरश मिश्र का जीवन पट, रामदरश मिश्र की साहित्य संपदा, रामदरश मिश्र जी का पत्र लिखावट के रूप में दिया है।

इस लघु-शोध-प्रबन्ध के अंत में आधार ग्रन्थ, संदर्भ ग्रन्थों की सूची, हिन्दी-संस्कृत तथा अंग्रेजी शब्द कोश, पत्र-पत्रिकाएँ आदि की सूची जोड दी है, जो मुझे इस शोध-कार्य के सिलसिले में विशेष सहा यक सिध्द हुई।

इस लघु-शोध-प्रबन्ध को परिश्रम के साथ सफल और परिपूर्ण बनाने की मैंने कोशिश की है। इतनी विस्तृत चर्चा करने का शायद मेरा ही प्रयत्न रहा हो।

ऋण निर्देश–

प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबन्ध की पूर्ति में मेरी प्रत्यक्ष वा अप्रत्यक्ष सहायता करने वाले तथा समय-समय पर मुझे प्रोत्साहित करने वाले मेरे श्रध्देय गुरूजनों, हितचिंतकों एवं आत्मीय मित्रों के प्रति कृतज्ञता भाव प्रकट करना मैं अपना आद्य कर्तव्य समझता हूँ।

मैंने रामदरश मिश्र जी के अनेक उपन्यास पढे। वैसे तो हर उपन्यास में मुझे कहीं-न-कहीं आंचलिकता की झलक मिली। तब मैंने श्रध्देय डॉ. रामदरश मिश्र जी को पत्र लिखा। उस पत्र में मेरी दृष्टि से 'पानी के प्राचीर', 'जल टूटता हुआ' , 'सूखता हुआ तालाब' और 'दूसरा घर' उपन्यास आंचलिक बतायें थे। तब उन्होंने मुझे विनाविलंब पत्र रूप में निर्देशन किया, जिसके कारण मुझे प्रबन्ध-विषय निश्चित करने में मदद हुई। उन्होंनें मुझे अपनी एक फोटो कापी भेज दी है। मैं उनका हृदयपूर्वक आभारी हूँ।

श्रध्देय डॉ. मधुकर श्री. हसमनीस जी ने मुझे प्रबन्ध विषयक उचित मार्गदर्शन किया। प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबन्ध डॉ. हसमनीस जी के सूक्ष्म निरीक्षण एवं निर्देशन का परिणाम है। उन्होंने मुझे अनेक महत्त्वपूर्ण सुझाव दिये और हर समय मुझे उत्साहित भी किया है। इन्होंने अपनी सातत्यपूर्ण व्यस्तता के बावजूद भी इस लघु-शोध-प्रबन्ध का प्रत्येक अध्याय अत्यंत सूक्ष्मता से देखकर मुझे निरंतर नयी दृष्टि देने का प्रयास

किया है। मैं उनका कृतज्ञतासहित आभारी हूँ।

शिवाजी विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग के भूतपूर्व विभागाध्यक्ष डॉ. व्ही.के.मोरे जी ने प्रथमतः से सहायता एवं प्रेरणा दी। मैं उनका ऋणी हूँ। आज के इस विभाग के अध्यक्ष आदरणीय डॉ. पी.एस.पाटील, प्रा.डॉ.अर्जुन चव्हाण जी, प्रा.डॉ. के.पी.शहा जी ने भी मुझे प्रेरणा दी और मार्गदर्शन किया, मैं उनका भी ऋणी हूँ।

आदरणीय प्रा.डॉ. सुनीलकुमार लवटे, प्रा. शरद कणबरकर, प्रा. कृ. ज. वेदपाठक, प्रा. एम्.के.तिवले, प्रा. मिस्. रजनी भागवत जी का आशीर्वाद, सहायता और प्रेम मेरे साथ रहा है, उनके प्रति मैं सविनय आदर प्रकट करता हूँ और उन्हें धन्यवाद भी देता हूँ।

प्र.प्राचार्य डॉ. बलवन्त साधु जाधव जी (आष्टा) ने मेरे जीवन को एक नया मोड दिया, एक नई दिशा दिखाई। मैं उनके प्रति सविनय आदर प्रकट करता हूँ। डॉ. जाधव और उनकी सुविद्य पत्नी सौ. मालती जाधव जी ने मुझे बार-बार प्रोत्साहन भी दिया । मैं उन्हें धन्यवाद देता हूँ।

वारणा विभाग शिक्षण मंडल के मानद सचिव विलासराव कोरे, मेरे प्राचार्य डॉ. ए.बी. दिगे, हिन्दी विभागाध्यक्षा सौ. सुरेखा शहापुरे ने इस शोध कार्य के लिए समय-समय पर प्रेरणा दी है, उनके प्रति मैं कृतज्ञ हूँ।

श्रध्देय प्रा. आर.बी. शेडगे, प्रा. पी.बी. मोकाशी (इस्लामपुर), प्रा. बी.डी. पाटील, प्रा.डॉ. आर.जी. देसाई (सांगली), श्री. गणपतराव शिन्दे, सौ. शोभा शिन्दे (आष्टा) ने भी मुझे समय-समय पर प्रेरणा दी है। मैं उनके प्रति कृतज्ञ हूँ।

मेरे अध्ययन के लिए समय-समय पर मुझे संदर्भ ग्रन्थ ढूँढकर देनेवाले शिवाजी विश्वविद्यालय के सभी कर्मचारी, हमारे महाविद्यालय के ग्रंथपाल श्री. ए.टी. लाड, श्री. एम्.जी. शिन्दे, श्री. एस्.आर. लोखंडे और ग्रन्थालय के अन्य कर्मचारी, विश्वासराव नाईक महाविद्यालय, शिराला के प्राचार्य तथा ग्रंथपाल ने मेरी सहायता की हैं। उनके प्रति भी मैं हमेशा ऋणी हूँ।

मेरे माता-पिता, मेरे बंधुवर, मेरी धर्मपत्नी, मेरी भाभी इन सभीने मुझे इस कार्य के लिए घरकाज से छुट्टी दी, समय दिया इस कारण ही यह प्रबन्ध मै पूरा कर सका। मेरा परिवार भी मेरे शोध कार्य में बराबर का हिस्सेदार हैं।

शीतल फोटो, चिकुर्डे के छायाचित्रकार विलास और श्रीकांत ने रामदरश मिश्र जी की फोटो कापी को कॉपिंग करने के लिए सहायता की इस लिए मैं उनका भी ऋणी हूँ।

मेरे सहपाठी और परममित्र प्रा.अशोक सालुंखे, प्रा. सुनीलकुमार वाघमोडे प्रा. अनिलकुमार सालुंखे, ने भी मुझे बार बार प्रोत्साहित किया मैं उनका ऋणी हूँ।

प्रबन्ध-लेखन के लिये जिन संदर्भ ग्रन्थों का मैंने उपयोग किया हैं उन सभी संदर्भ ग्रन्थों के लेखकों तथा प्रकाशकों के धन्यवादार्थ मेरे पास शब्द नहीं है। अतः उनके ऋण में ही रहना पसन्द करूँगा। अंत में आत्मीयता और तत्परता से सुचारू रूप में प्रबन्ध का संगणकीय टंक -लेखन करनेवाले चैतन्य कॉम्प्युटर सेंटर, इस्लामपुर के सौ. शारदा शेलके, श्री.माणिककुमार पाटील (कापुसखेड) को मैं कैसे भूल सकता हूँ? उनकी अमूल्य सहायता के लिए मैं हमेशा कृतज्ञ रहूँगा।

इनके अतिरिक्त जिन विव्दनों, साहित्यकारों, गुरूजनों मित्रों एवं शुभचिंतकों ने समय-समय पर प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से सहयोग, सुझाव एवं आशीर्वाद आदि प्रदान कर अनुगृहित किया, मैं उन सब के प्रति कृतज्ञ हूँ।

— प्रकाश शंकरराव चिकुर्डेकर.

'आनंदी निवास',
एस. टी. स्टॅन्ड रोड, चिकुर्डे,
तहसील - वालवा (इस्लामपुर),
जिला- सांगली (महाराष्ट्र),
चिकुर्डे- ४१५ ४१२.